Date – 20-07-2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – II (Hons.)

Topic – Causality theory of Hume.

Scanned with CamScanner

ह्यूम का कारणता - सिद्धांत

लॉक और बर्कले ने ज्ञानमीमांसा के बीजतत्व को जानने के लिए मनोवैज्ञानिक विधि की मदद ली। ह्यूम भी इसी परम्परा को अपनाते हैं परंतु ये लॉक, बर्कले के मूल को सरल और संगत बनाने की कोशिश करता है। ह्यूम के अनुसार ज्ञान की रचना दो ही प्रकार के बीजतत्व पाये जाते हैं, अर्थात प्रत्यक्ष की प्रतिमा या उसकी नकल। संवेदनाओं को ह्यूम ने मुख्य माना है। अनुचिंतन, संवेदनाओं की नकल नहीं है, पर संवेदनाओं की तुलना में उसे गौण कहा जाता है।

ह्यूम का कहना है कि हम प्रत्यक्ष को अलग-अलग करके जानते हैं और वे एक-दूसरे से पृथक रहते हैं, यदि उनके बीच हम संबंध स्थापित करते हैं तो यह संबंध बाहरी तथा आकस्मिक साहचार पर निर्भर करते हैं। साहचर्य के तीन नियमों को ह्यूम ने स्वीकार किया है, अर्थात सामीप्य, सादृश्य तथा कारण-कार्य के नियम।

ह्यूम के लिए कारण-कार्य का संबंध विशेष स्थान रखता है, क्योंकि इसका संबंध यथार्थ पदार्थों से रहता है। इसी के आधार पर साक्षात प्रत्यक्षों से परोक्ष के संभाव्य प्रत्यक्षों की ओर हम प्रगति करते हैं और प्रत्यक्ष सम्बंधी सर्वव्यापक नियमों कि स्थापना होती है। जैसे- हम नियम बनाते हैं कि गुरुत्वाकर्षण की शक्ति है या मलेरिया कुनैन से अच्छा होता है। यदि वस्तुओं और गुरुत्वाकर्षण में वास्तव में संबंध हो, तो हमारा नियम सत्य होगा, अन्यथा नहीं। विज्ञानों में नियमों की स्थापना की जाती है और नियम का संबंध, कारण-कार्य पर निर्भर हो जाता है। यदि कारण-कार्य की अवधारणा सही होती है तो वैज्ञानिक नियम भी सत्य होंगे। नहीं तो वह संदेहात्मक ही होंगे।

कारण-कार्य के संबंध में ह्यूम तीन तथ्यों का उल्लेख किया है।

(क) कारण-कार्य के बीच संनिधि का संबंध पाया जाता है।

(ख) कार्य की अपेक्षा कारण पूर्व होता है।

(ग) कारण-कार्य के बीच नित्य संयोग के अतिरिक्त अनिवार्यता का संबंध पाया जाता है।

ह्यूम के अनुसार कारण-कार्य के बीच अनिवार्यता का संबंध होता है, अर्थात् कार्य में ऐसी शक्ति रहती है कि कारण के रहने पर तत्पश्चात कार्य उत्पन्न होगा। ह्यूम ने कारण-कार्य की अवधारणा को निम्नलिखित रूप से विश्लेषण किया है। यदि कारण-कार्य का संबंध सही हो तो उसे प्रत्यक्ष पर आधारित होना चाहिए। पहली बात है कि जिन वस्तुओं को हम कारण-कार्य समझते हैं, उनमें सामीप्य का संबंध होता है। जैसे- सूर्य और ताप, ज्वाला और दाहकता इत्यादि। कारण पूर्व होता है और तब उसके बाद कार्य होता है। अतः सामीप्य और पूर्ववर्तिता दो घटनाओं के बीच ऐसा संबंध होता है। जिसमें कारण-कार्य की धारणा को [illegible] करते हैं। इन दोनों संबंधों को छोड़कर तीसरा महत्वपूर्ण संबंध भी इसमें समझा जाता है और वह है शक्ति या अनिवार्य लगाव। कारण में समझा जाता है कि इसमें कोई ऐसी शक्ति है जिससे कार्य उत्पन्न होता है। वास्तव में क्या कोई ऐसा प्रत्यक्ष है जिस पर 'उत्पादक या अनिवार्य लगाव' को आधारित किया जाता है? यदि हम कैरम की गोटियों को कारणात्मक लगाव देखें तो एक गोटी में दूसरी गोटी के धक्का से गति उत्पन्न होती है, लेकिन धक्का देने वाली और धक्का खाने वाली गोटी से कोई शक्ति निकलकर धक्का खानेवाली गोटी में घुस जाती है। कारण-कार्य की धारणा में उत्पादक शक्ति को ही मुख्य लक्षण समझा जाता है। कारण कार्य की समस्या तभी दूर हो सकती है जब हम इन दोनों प्रश्नों का उत्तर देते हैं।

i) हमारे लिए कहना क्यों जरूरी होता है कि बिना कारण के कोई भी घटना नहीं हो सकती।

ii) क्यों हम कहते हैं कि अमुक घटना फलस्वरूप दूसरी घटना का कारण होगी।

हम क्यों ऐसा कहते हैं कि बिना किसी कारण के घटना नहीं हो सकती। लॉक के अनुसार यह प्रागनुभव सिद्धांत है। परंतु ह्यूम प्रागनुभव तथा स्वतः प्रत्यक्षों की संभावना स्वीकार नहीं करते। इसलिए इनके लिए अनुभव

सिद्धांत का कोई आधार नहीं होता। उनका कहना है कि इस सिद्धांत के लिए जितने भी प्रमाण दिया जाए, वह दोषपूर्ण है। कारण - कार्य दो भिन्न, और परिस्पष्ट प्रत्यय है और इसलिए वे पृथक भी है। यह सोचना जरूरी नहीं है कि आग से ताप हो, क्योंकि कल्पना करते है कि आग से ताप न मिलकर हमें ठंडक मिले अर्थात् आग और ताप ये दो परिस्पष्ट और भिन्न - भिन्न प्रत्यय है और इसलिए एक की कल्पना बिना दूसरे प्रत्यय की हो जाती है। अब यदि प्राकृतिक एकरूपता का यह व्यापक नियम अनुभव पर आश्रित हो तो किस प्रकार अननुभूत, अनदेखे भविष्य को अनुभवाश्रित कहा जाएगा? अतः, न तो प्राकृतिक एकरूपता को अनुभवाश्रित कहा जाता है और न अनदेखे भविष्य पर आधारित अनुमान को तर्कसंगत कहा जाता है।

Scanned with CamScanner